REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 9 | JUNE - 2025

''महायान बौद्ध धर्म के साहित्य में पर्यावरणीय संरक्षण के सिद्धांत और पर्यावरणीय दृष्टिकोण''

Monu
Research Scholar (Ph.D), Department of History and Archaeology,
M. D. University, Rohtak.

सारांशः

महायान शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग एक ऐसे माध्यम को अभिव्यक्त करने के लिए किया गया था जिसके द्वारा ईश्वर रुप में बुद्ध की प्रार्थना करके निर्वाण प्राप्त किया जा सकता है। महायान शब्द को प्रारंभ में किसी धार्मिक सिद्धांत के रूप में वर्णित नहीं किया गया और ना ही ऐसा कोई सैद्धांतिक विवाद महायान शब्द से संबंधित देखने को मिलता है। कालांतर में प्रगतिशील वर्ग के द्वारा बौद्ध धर्म के उदार एवं व्यवहारिक पक्ष को महायान कहकर संबोधित किया। महायान बौद्ध धर्म, जो करुणा, अहिंसा, और प्रतीत्यसमुत्पाद के सिद्धांतों पर आधारित है, पर्यावरण संरक्षण के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह शोध पत्र महायान के प्रमुख सिद्धांतों, जैसे बोधिसत्व आदर्श और परस्पर निर्भरता, को पर्यावरणीय नैतिकता के संदर्भ में विश्लेषित करता है। त्रिपिटक, लोटस सूत्र, और आधुनिक पर्यावरणीय विमर्श के आधार पर, यह पत्र दर्शाता है कि कैसे महायान शिक्षाएँ प्रकृति के प्रति सम्मान को प्रोत्साहित करती हैं। विशेष रूप से, तिब्बती और जेन बौद्ध परंपराएँ पर्यावरण संरक्षण में योगदान देती हैं। यह पत्र समकालीन पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान में महायान दर्शन की प्रासंगिकता को भी रेखांकित करता है। महात्मा बुद्ध को महाभैषज, प्रथम पर्यावरणविद्, करूणामयी जीवप्रेमी आदि रूपों में जाना जाता है तथापि, ऐसा नहीं है कि बुद्ध से पूर्व के व्यक्तियों में प्रकृति के प्रति चेतना या पर्यावरण प्रेम की संवेदना नहीं थी। वैदिक ऋषि एवं जैन धर्म अपने प्रकृति मैत्रि संकल्प एवं जीवनशैली के लिए वर्तमान में भी उतने ही प्रसिद्ध हैं जितने प्राचीनकाल में थे।

बीज शब्द : सैद्धांतिक, करुणा, अहिंसा, पर्यावरण, संरक्षण, शिक्षाएँ, प्रकृति, प्रासंगिकता, पर्यावरणीय चुनौतियां, करूणामयी, जीवप्रेमी, जीवनशैली।

परिचय

मनुष्य के आन्तरिक मनोभावों का प्रभाव उसके बाह्य जगत पर भी प्रतिविम्बित होता है। मानव ने संसार को अलग–अलग वस्तुओं और घटनाओं के एक समूह के रूप में प्रस्तुत किया। मनुष्य की इस तरह की चिन्तन पद्धति में न केवल प्राकृतिक पर्यावरण को हानि पहुँचाई, अपितु मानव समाज को राष्ट्रों, जातियों, धार्मिक और राजनैतिक समूहों में वर्गीकृत कर दिया। पर्यावरण एक अविभाज्य संहति है। भौतिक, जैविक एवं सांस्कृतिक तत्त्वों वाले क्रिया"ील तत्त्वों से इसकी रचना होती है। ये तत्त्व अलग–अलग तथा सामूहिक रूप से विभिन्न रूपों में परस्पर सम्बद्ध रहते हैं। भौतिक तत्त्व (स्थान, स्थल रूप, जलीय भाग, जलवायु, मृदा, शैल तथा खनिज)

मानव निवास क्षेत्र की परिवर्तन"ाील, वि"ोषताओं उसके सुअवसरों तथा प्रतिबंधन अवस्थितियों को नि"चित करते है। जैविक तत्त्व (पौधे, जन्तु, सूक्ष्म जीव, मानव) जीवमण्डल की रचना करते हैं।[1] आज के समय में, जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, और जैव विविधता हानि जैसे पर्यावरणीय संकट वैश्विक चुनौतियाँ हैं।

पर्यावरणीय संरक्षण के सिद्धांत

ललितविस्तार

ललितविस्तार ग्रन्थ महायान वैपुल्य सूत्रों में अति पवित्र माना जाता है। इस घरणीतल पर बुद्ध द्वारा जो क्रीड़ा (ललित) की गई हैं उनका विस्तार से वर्णन होने के कारण प्रस्तुत ग्रन्थ का नाम 'ललितविस्तार' पड़ा है। इसके अतिरिक्त तत्कालीन भारत की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, भौगोलिक, आदि अवस्थाओ ं के सम्बन्ध में भी प्रचूर सामग्री उपलब्ध होती है। यद्यपि प्रस्तुत ग्रन्थ बुद्धकथा के विकास का इतिहास है फिर भी इस ग्रन्थरत्न में मथुरा, मिथिला, हस्तिनापुर आदि नगरों की चर्चा है जिनका ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व है। इसमें जहाँ वन, पर्वत, द्वीप एवं नदियों का उल्लेख है, वहीं दूसरी ओर विविध विधाओं, लिपियों, आभूषणों, विवाहों, पर्दा प्रथा, कृषि सम्बंधी बातों की भी चर्चा की गई है।

ललितविस्तार (दा"ार्निक और सांस्कृतिक सर्वेक्षण) की लेखिका श्रीमती शारदा गांधी पर्यावरण को द"ार्ाते हुए लिखती हैं कि यह ग्रन्थ महायान बौद्ध सम्प्रदाय में महावस्तु की शैली पर लिखा गया है जिसमे ं तथागत बोद्धिसत्व के बुद्धत्व प्राति के लिए अवतरित भव की लीला का वर्णन किया है। इस ग्रन्थ के अर्न्तगत भौगोलिक व पर्यावरण के क्षेत्र में विस्तृत वर्णन नहीं किया गया है लेकिन इसमे ं नगरों, जनपदो ं, वस्त्र–आभूषणों, वे"ाभूषा, व्यवसाय उद्योग–धन्धे, ग्रामीण जीवन, कृषि (फसलें, सिंचाई) वन, पर्वत (ऋतु–भल्लिक परिवर्त में अष्टांग एवं गन्धमादन पर्वत की चर्चा प्राप्त है), ऋतुएं, खान–पान, औषधियां आदि पर्यावरण सम्बंधित वर्णन मिलता है।

प्रतीत्यसमुत्पाद (परस्पर निर्भरता)

जब हम विश्व में हो रही दुःखभरी घटनाओं को देखते हैं. ही रोने लगते है और प्रार्थना करते हैं। इनसे कुछ बहुत अधिक प्राप्त न होगा। इन समस्याओं में से अधिकाश मानव निर्मित थी। इसलिये स्वाभाविक रूप से उन्हें मानय समाधान की आवश्यकता है। प्रतीत्यसमुत्पाद की दृष्टि से इस प्रकार की अवस्था को अविद्या कहा जाता है। माध्यमिक मत में तत्त्व के प्रति मिथ्या प्रतिपत्ति ही अविद्या कहलाता है। रेने देकार्त की भाँति चिन्तन करने वाला व्यक्ति माध्यमिक की शब्दावली में अज्ञानी ही कहा जा सकता है, क्योंकि वह भी अनात्म को आत्म, क्षणिक को स्थाई अभाव को भाव समझता है तथा स्वयं द्वारा समझे गये ज्ञान से गर्भित होता रहता है। वह सत्य को नहीं देख पाता है। जैसे अविद्या के नाश होने पर ही कोई सत्य का दर्शन कर सकता है. वैसे ब्रह्माण्ड के बारे में क्वाण्टम भौतिकी की खोजों, गहन पारिस्थितिकी, गया परिकल्पना की संकल्पनाओं ने देकार्त की चिन्तन पद्धति को हटाकर अन्योन्याश्रितता का विकल्प प्रस्तुत किया। मनुष्य पर्यावरण से पृथक् नहीं है। अपितु जैविक और भौतिक पर्यावरण की भाँति वह मी सहजीवी है। पर्यावरण और मानव के क्रियाकलापों का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध होता है तथा प्रभाव भी उभयविध होता है। महायान का मूल सिद्धांत प्रतीत्यसमुत्पाद यह सिखाता है कि सभी प्राणी और पर्यावरण एक–दूसरे पर निर्भर हैं। यदि प्रकृति का शोषण होता है, तो यह सभी प्राणियों के लिए हानिकारक है। यह सिद्धांत आधुनिक पर्यावरणीय अवधारणाओं से मेल खाता है।

बुद्धचरित

बुद्धचरित के तृतीय सर्ग संवेगोत्पतिः में वर्णन है कि किसी समय सिद्धार्थ दो वन के कोमल तृणों से सम्पन्न होता है जहाँ के वृक्ष कोयलों की ध्वनि से निनादित (गुंजायमान) है तथा कमलों के तालाबों से सु"ोभित गीत से निबद्ध हैं। स्त्रियो ं के प्रिय नगर के उद्यानों की सुन्दरता सुनकर धर के अन्दर बंधे हुए हाथी के समान राजकुमार ने बाहर जाने की इच्छा व्यक्त की। इस प्रकार हम देखते हैं कि अ"वघोष अपने ग्रन्थ बुद्धचरित में ऋतुओं (ग्रीष्म, शीत, वर्षा व शरद) का वर्णन करता है। साथ ही साथ नगरों की भौगोलिक स्थिति का भी पता

[1] सविंद्र सिंह अपनी पुस्तक 'पर्यावर.ा भूगोल' (प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2008, पृष्ठ–21)

चलता है। उद्यानों पेड़–पौधों (पीपल, आम आदि), औषधियां देने वाली झाड़ियों आदि का विस्तृत वर्णन मिलता है। इस ग्रन्थ में पर्वतों (गिरिव्रज, सुमेरू, महेन्द्र आदि), नदियों (गंगा, यमूना) आदि का वर्णन मिलता है जो महात्मा गौतम बुद्ध के जीवन से जुड़े हुए थे।

बोधिसत्व आदर्श और करुणा

बोधिसत्व वह व्यक्ति है जो सभी प्राणियों के कल्याण के लिए कार्य करता है। लोटस सूत्र में वर्णित करुणा का सिद्धांत पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहित करता है, क्योंकि प्रकृति सभी प्राणियों का आधार है। तिब्बती बौद्ध धर्म में यह आदर्श वृक्षारोपण और वन्यजीव संरक्षण जैसी प्रथाओं में दिखाई देता है।

लंकावतारसूत्र– डी. टी. सूजूकि द्वारा अनुवादित महायान शाखा का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है इसमे महात्मा बुद्ध के जीवन से जुड़े अनेक पहलुओं पर प्रका"ा डाला गया है। महात्मा बुद्ध के धम्म, द"ान तथा उनकी ि"ाक्षाएं आदि इस ग्रन्थ में मिलती है। इसमें पर्यावरण की विस्तृत व्याख्या तो नहीं मिलती है लेकिन अनेक स्थानों पर पर्यावरण से संबंधित वर्णन मिलता है। जैसे महात्मा बुद्ध की तुलना मणि के नाम से जो एक बहुमुल्य रत्न से की है जो अपने आप में पूरी तरह से पारद"ाी और रंगहीन है और केवल इस वि"ोषता के कारण यह विभिन्न रंगों (विचित्र–रंग) को प्रतिबिंधित करता है। उसी प्रकार बुद्ध की कल्पना प्राणियों द्वारा की जाती है।

अहिंसा और प्रकृति तिब्बती और जेन परंपराओं में पर्यावरणीय प्रथाएँ

अहिंसा महायान का केंद्रीय सिद्धांत है, जो न केवल मानवों, बल्कि पेड़–पौधों और जीव–जंतुओं के प्रति भी लागू होता है। सुत्ता–निपात में बुद्ध ने कहा है कि छोटे जीवों और प्रकृति की रक्षा करनी चाहिए।[2] तिब्बती बौद्ध धमर्रू तिब्बती बौद्ध धर्म में, पवित्र स्थलों (जैसे पर्वत और नदियाँ) को संरक्षित करने की परंपरा है। दलाई लामा ने 2024 में पर्यावरण संरक्षण के लिए वैश्विक जागरूकता को बढ़ावा दिया, जिसमें हिमालयी क्षेत्रों में ग्लेशियर संरक्षण शामिल है (द प्रिंट, 2024)। तिब्बती मठों में वृक्षारोपण और जल संरक्षण की प्रथाएँ प्रचलित हैं। जैन–बौद्ध धर्म जैन परंपरा प्रकृति के साथ एकात्मकता पर जोर देती है। जैन उद्यान (जैसे जापानी रॉक गार्डन) प्रकृति के प्रति सम्मान को दर्शाते हैं।[3] जैन मास्टर्स, जैसे थिच नींज हान, ने पर्यावरणीय जागरूकता को ध्यान प्रथाओं से जोड़ा है ।

महायान बौद्ध धर्म का पर्यावरणीय दृष्टिकोण

महायान बौद्ध धर्म का पर्यावरणीय दृष्टिकोण उपभोक्तावादी संस्कृति के विपरीत है, जो प्रकृति के शोषण को बढ़ावा देती है। तिब्बती और जेन परंपराएँ व्यक्तिगत और सामुदायिक स्तर पर पर्यावरणीय जागरूकता को प्रोत्साहित करती हैं। हालांकि, आधुनिक औद्योगिक समाज में इन सिद्धांतों को लागू करना चुनौतीपूर्ण है। फिर भी, महायान शिक्षाएँ टिकाऊ विकास और पर्यावरणीय नीतियों के लिए एक वैकल्पिक मॉडल प्रदान करती हैं। महायान बौद्ध धर्म, जो सभी प्राणियों के कल्याण पर जोर देता है, पर्यावरण संरक्षण के लिए एक नैतिक और दार्शनिक ढांचा प्रदान करता है। प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धांत यह सिखाता है कि सभी प्राणी और प्रकृति परस्पर जुड़े हैं, जिससे पर्यावरण का संरक्षण सभी के लिए आवश्यक हो जाता है। पर्यावरण मानव प्रकृति द्वारा निर्मित है तो मानव द्वारा प्रकृति को जानना भी स्वभाविक है। भौतिक प्रकृति, जीवन–जगत और पर्यावरण इतना विस्तृत है कि इसको एक पहलू से नहीं समझा जा सकता है। सकारात्मक रूप से कहें तो दुनिया में जो तत्व और ताकते हैं वे हमारे शरीर–मन परिसर में भी मौजूद हैं जो हमें अपने पर्यावरण के साथ समायोजित करने मे सक्ष्म बनाते हैं।[4] यह शोध पत्र महायान बौद्ध धर्म के सिद्धांतों और प्रथाओं को पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में विश्लेषित करता है, विशेष रूप से तिब्बती और जैन परंपराओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए। प्रज्ञापारमिता सूत्र को

[2] सुत्ता–निपात, 2020

[3] बोधि पथ, 2019

[4] पी० चट्टोपाध्याय, 'हिस्ट्री ऑफ साइंस, फिलास्फी एण्ड कल्चर इन इण्डियन सिविलाइजे"ान' (वोल्यूम–4, भाग–2)

महायान विचारों के अंतर्गत विशिष्ट स्थान प्राप्त है। यह ग्रंथ बौद्ध धर्म के दार्शनिक सिद्धांत (शून्यता) पर आधारित है। बौद्ध धर्म के अंतर्गत शून्यता का सिद्धार्थ नागार्जुन द्वारा प्रतिपादित किया गया।

प्रज्ञापरमिता का अर्थ है सबसे उच्च ज्ञान, संसार में समस्त धर्म केवल प्रतिबिंब मात्र है उनकी वास्तविकता नहीं है यही शून्यता का ज्ञान ही प्रज्ञा का महान उत्कर्ष है। डॉ० तुलसीराम शर्मा अपनी पुस्तक 'महायान बौद्ध धर्म की रूपरेखा' (हिंदी रूपांतरण) में महायान शाखा में पर्यावरणीय चेतना को लेकर पशुओं के संरक्षण, पर्यावरण के संरक्षण की चेतना पर बल देते हैं।[5] महायान के अपने सुत्र है तथा धर्मता की वास्तविक अनुकूलता उसी मे है। हीनयान में विभिन्न प्रदेशिक आवासों की स्थापना ने इनके मध्य निकाय भेद के क्रम को अग्रसर होने में सहायता पहुंचाई। इसमें महासंधिक संप्रदाय ने बुद्ध और बोधिसत्व को देवताओं के समान लोकोत्तर रूप में प्रस्तुत किया।

इसी समय गांधार एवं मथुरा में ग्रीक एवं भारतीय कला के संपर्क और भक्ति के आग्रह से बुध प्रतिमा का आविर्भाव हुआ। इस प्रकार लोकोत्तर बुद्ध और बोधिसत्व, उनकी भक्ति एवं प्रतिमाएं इन नवीन तत्वों ने संदर्भ को एक लोकप्रिय धर्म का रूप प्रदान किया।[6] श्रद्धोत्पद शास्त्र का संबंध संस्कृत कवि अश्वघोष से माना जाता है। इस ग्रंथ में महायान संप्रदाय के मूल सिद्धांतों का अपेक्षाकृत संक्षिप्म लेकिन प्रभावशाली वर्णन प्राप्त होता है। इसको महायान का जागरण भी कहा जाता है।

साहित्य समीक्षा

बौद्ध साहित्य में पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा गहराई से समाई हुई है। त्रिपिटक में, भगवान बुद्ध ने प्रकृति के प्रति सम्मान और अहिंसा को प्रोत्साहित किया (सुत्ता–निपात, 2020)। सुजुकि, डी० टी०, ''आउटलाइन आफ महायान बुद्धिज्म'' (युनिवर्सिटी आफ ि"ाकांगो, लंदन, 1907) महायान बौद्ध मनीषी डी०टी० सुजुकि तथा इनकी पत्नी बिएटिस लेन सुजुकि (महायान बुद्धिजम, दि बुद्विस्ट सोसायटी लंदन, 1938) दोनों ने महायान शाखा पर कार्य किया। डी०टी० सुजुकि अपनी इस पुस्तक में महायान शाखा का उद्भव, महायान शाखा के सूत्रों में महात्मा बुद्ध के विचारों का संकलन आदि प्रस्तुत किया है तथा साथ ही महायान बौद्ध धर्म की मौलिक ि"ाक्षाओं 11 के सम्बन्ध मे ं पि"चमी आलोचकों द्वारा दी गई राय का खण्डन किया है महायान का लोटस सूत्र बोधिसत्व आदर्श को प्रस्तुत करता है, जो सभी प्राणियों के कल्याण के लिए कार्य करने को प्रेरित करता है (लोटस सूत्र, 2020)।

आधुनिक शोधकर्ता, जैसे देवांशु कुमार सिंह (2020), ने बौद्ध धर्म के पर्यावरणीय दृष्टिकोण को गहन पारिस्थितिकी से जोड़ा है। तिब्बती बौद्ध धर्म में, दलाई लामा ने पर्यावरण संरक्षण को बौद्ध करुणा का हिस्सा बताया है (द प्रिंट, 2024)। नरेन्द्रदेव आचार्य, ''बौद्धधर्म–द"ान'' (मोतीलाल बनारसीदास पब्लि"ार्स प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, 1995) प्रस्तुत पुस्तक महात्मा बुद्ध के विचारों को व्यक्त करती है। यह पुस्तक बौद्ध धर्म के आरम्भ से लेकर पूर्व मध्यकाल तक का विवरण प्रस्तुत करती है। इसमें महात्मा बुद्ध द्वारा बौद्ध धर्म के उद्भव से लेकर महायान शाखा की उत्पत्ति व अन्य शाखाओ ं को विस्तार से वर्णित किया गया है। जैन–बौद्ध धर्म में, प्रकृ ति के साथ एकात्मकता पर जोर दिया जाता है, जो पर्यावरणीय जागरूकता को बढ़ावा देता है (बोधि पथ, 2019)।

निष्कर्ष

पर्यावरण इतिहास का अध्ययन न केवल जीव विज्ञान, परिस्थितिक विज्ञान की उप शाखाओं में लगे वैज्ञानिकों तथा सीमित है, बल्कि यह भविष्य के लिए एक नया प्रतिमान स्थापित करने के लिए इतिहासकारों की सक्रिय तथा स्वतंत्र भूमिका की मांग भी करता है। महायान बौद्ध धर्म, विशेष रूप से तिब्बती और जेन परंपराएँ, पर्यावरण संरक्षण के लिए एक समृद्ध दार्शनिक और व्यावहारिक ढांचा प्रदान करता है। प्रतीत्यसमुत्पाद, करुणा,

[5] शर्मा, तुलसीदास, महायान बौद्ध धर्म की रूपरेखा, महयान बौद्ध धर्म की रूपरेखा, डी० टी० सूजूकी के 'आऊटलाइन ऑफ महायान बुद्धिज्म का हिन्दी रूपांतरण', इस्टर्न बुक्स लिंकर्स, दिल्ली, 2007 पृ० 5–6

[6] उपाध्याय, भरत सिंह, बौद्ध दर्शन और अन्य भारतीय दर्शन, पृ० 557–586

और अहिंसा जैसे सिद्धांत पर्यावरणीय संकटों के समाधान के लिए प्रासंगिक हैं। भविष्य में, इन शिक्षाओं को शिक्षा, नीति निर्माण, और सामुदायिक प्रथाओं में शामिल करके पर्यावरण संरक्षण को और सशक्त किया जा सकता है। अतः कहा जा सकता है कि इतिहास को नए दृष्टिकोण से देखने की निरन्तर आवश्यकता है। ऐसा ही एक नवीन दृष्टिकोण पर्यावरण इतिहास प्रदान करता है। इसी कारण प्रस्तुत शोध–पत्र को चुना गया है जो इतिहास की अपूर्णता को पूर्ण करने व सही दिशा प्रदान करने के लिए सहायक होगा।

प्राथमिक ग्रन्थ

प्रमाणवर्तिकम (धर्मकीर्तिकृत)	सम्पादक व अनुवाद स्वामी श्री योगिन्द्रानन्द जी महराज प्रकाशक– स्वामी योगिद्रानन्द उदासीन संस्कृत महाविद्यालय, सी0के0 36/19 ढुण्डिराज गली, वाराणसी–221001
बोधिचर्यावतार (आचार्य शान्तिदेवकृत)	प्रवचनकार परमपावन दलाईलामा अनुवादक तथा सम्पादक– आचार्य कर्मामोनलम, प्रकाशक–निजी सचिवालय, थेगछेन छोलिङ, धर्मशाला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश (भारत). 1983
बोधिचर्यावतार (आचार्य शान्तिदेवकृत)	मूल एवं हिन्दी अनुवाद–सम्पादक–सिंह, परमानन्द अनुवादक– तिवारी, रामनिवास प्रकाशक– बौद्ध आकर ग्रन्थमाला काशी विद्यापीठ, वाराणसी
बुद्धचरित (अ"वघोष कृत)	ई०वी० कावेल द्वारा सम्पादित कास्मो पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1987
मज्झिमनिकाय	हिन्दी अनुवाद, सांकृत्यायन, राहुल, महाबोधि सभ, सारनाथ वाराणसी, 1933
मध्यमकशास्त्रम (आर्यनागर्जुनीय)	आचार्य नरेन्द्रदेव कृत हिन्दी भाषानुवाद सहितम् । सम्पादक– स्वामी द्वारिकादास शस्त्री प्रकाशक– बौद्ध भारती, वाराणसी
महायानसूत्रालंकार (आर्य असंगविरचितः)	सम्पादक– स्वामी द्वारिकादास शास्त्री (आचार्य नरेन्द्रदेव कृत संक्षिप्त हिन्दी रूपान्तर सहित) प्रकाशक– बौद्ध भारती, 1985, वाराणसी–221001
महावस्तु अवदान	राधागोविन्द वसाक द्वारा सम्पादित, संस्कृत कालेज ग्रन्थ माला, कलकत्ता, 1963
महावंश	महावंश–मूल एवं हिन्दी रूपान्तरण, स्थविर महानाम द्वारिकादास शास्त्री द्वारा अनुवादित परमानन्द द्वारा सम्पादित बौद्ध आकर ग्रन्थ माल, वाराणसी, 1996
महावंश	हिन्दी अनुवाद, कौसल्यायन, भदन्त आनन्द, प्रयाग, 1942
माध्यमिक कारिका (आचार्य नागार्जुन कृत)	सम्पादक– चटर्जी, हरअम्बा, कलकत्ता, 1962
मिलिन्दपन्हों	हिन्दी अनुवाद काश्यप, भिक्षु जगदीश, महाबोधि सभा सारनाथ, 1937, वाराणसी–221007
निदान कथा	धर्मरक्षित सम्पादक व अनुवादक, संस्कृत बुक डिपो, वाराणसी, 1956
लंकावतार सूत्र	अनुवादक–शर्मा, तुलसीराम प्रकाशक– ईस्टर्न बुक लिंकर्स 5825 न्यू चन्द्रवल, जवाहन नगर, बिम–110007
लंकावतार सूत्र	सम्पादक बागची, श्रीशीतांशु शेखर, मिथिला विद्यापीठ, 1960
ललित–विस्तर	अनुवाद तथा भोटभाषान्तर के आधार पर पाठशोधनात्मक टिप्पणियाँ। अनुवाद–शास्त्री, शान्तिभिक्षु प्रकाशक– हरिमाघव शरण निदेशक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 1984

विनयपिटक	हिन्दी अनुवाद. सांकृत्यायन, राहुल, महाबोधि सभा, सारनाथ, 1965 वाराणसी–221007
विशुद्धिमग्ग	हिन्दी अनुवाद, भिक्षु धर्मरक्षित, दो खण्डों में, महाबोधि सभा, सारनाथ, 1956–1957. वाराणसी–221007
विशुद्धिमार्ग	विनोद चन्द्र पाण्डेय, सिद्धार्थ पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1993
विज्ञप्तिमात्रतासिद्धि–प्रकरणद्वयम आचार्य वसुबन्धु प्रणीतम	प्रधान सम्पादक– त्रिपाठी, भागीरथी प्रसाद सम्पादक– व्याख्याकारानुवादो थुबतन छोगडुबशास्त्री और पं0 रमाशंकर त्रिपाठी प्रकाशन– वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय, 1972

द्वितीयक ग्रन्थ

गऊन्डी, ए०	द – नेचर ऑफ दि इन्वायरमेंट, चतुर्थ संस्करण, आक्सफोर्ड यूनिर्वसिटी, 2001
एरविल, रोर्बट	मैन एण्ड इन्वायरमेंट – क्राइसिस एण्ड द स्ट्रेटजी ऑफ च्वाइस, 1967
लाह, बी० सी०	आनंदज्योति भिखू, जियोग्राफी ऑफ अर्लीबुद्धिजम, कलकत्ता, 2014
उपाध्याय, भरतसिंह	बुद्धकालीन भारतीय भूगोल पालि त्रिपिटक और उसकी अट्ठकथाओं के आधार पर, प्रथम संस्करण, प्रयाग, 2018
कुमार आनंद, अशोक	द० बुद्धिज्मइन इण्डिया (6th century Bc- to 3rd century A.D) ज्ञान पब्लिकेशन हाऊस दिल्ली, 2012
हैबरमैन, डेविड एल०	पीपल वृक्ष : उत्तरी भारत में वृक्षों की उपासना, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2013
रंगराजन, एम०	भारत में पर्यावरण का चिंतन, नोएडा, डोरलिंग किंडरस्ले प्रा० लिमिटेड, 2007
कोंज, एडवर्ड	बुद्धिष्टथोट इन इण्डिया देयर फेज ऑफ बुद्धिष्ट फिलोसफी,लंदन, 1962
देशमुख, एस.,	नेचर एण्ड द इन्वायरमेंट इन अर्लि बुद्धिजम, सिंगापुर, 2015
हबीब, इरफान,	*मनुष्य और पर्यावरण : भारत का पारिस्थितिक इतिहास,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015

शोध पत्रिकाएँ एवं जर्नल

- आर्क्योलॉजी सर्वे ऑफ इण्डिया रिपोर्ट इण्डियन एण्टीक्वेरी, बम्बई।
- इंडियन हिस्टोरिक्ल क्वार्टली, कलकत्ता।
- एनुअल रिपोर्ट ऑफ द आर्क्योलॉजिक्ल सर्वे ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली।
- वेद विद्या, महर्षि संदीपनी राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन।
- इंडियन हिस्टोरिक्ल रिव्यू
- इंडियन इकॉनोमिक एंड सोशल हिस्ट्री रिव्यू
- जर्नल ऑफ द एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल।

- जर्नल ऑफ द इण्डियन सोसाइटी ऑफ ओरियंटल आर्ट।
- जर्नल ऑफ इंडियन हिस्ट्री।
- जर्नल ऑफ एंशियंट इंडियन हिस्ट्री, कलकत्ता।
- जर्नल ऑफ इकोलॉजी एंड द नेचुरल एन्वायरमेंट।